>

Title: Need to take stringent action against the persons involved in production and sale of spurious milk and milk products in the country.

श्री गणेश सिंह (सतना): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार के माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जी का ध्यान देश में नकली मिलावटी एवं सिंथैटिक दूध, पनीर एवं खोवा जो बाजार में खुलेआम बिक रहा है, जिससे लोग गंभीर बीमारियों के शिकार हो रहे हैं, उस ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

हमारा देश सरकारी आंकड़ों के मुताबिक दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक है। यदि यह सही है तो फिर सिंथैटिक दूध बाजार में धड़ल्ले से क्यों बिक रहा है। रेलवे स्टेशनों पर जो चाय मिलती है, उसका दूध नकली होता है और आए दिन ऐसे मामले प्रकाश में आते हैं। मिठाइयों की दुकानों में नकली खोवा, पनीर हर रोज उपयोग होता है। आज देश के सभी शहरों में मिलावटी दूध, पनीर और खोवा खुलेआम बाजार में बिक रहा है। अकेले दिल्ली में ही हर रोज 40 लाख लीटर दूध की जरूरत है। क्या इसकी आपूर्ति के सही आंकड़ें सरकार के पास हैं कि किन-किन डेयरियों द्वारा मदर डेयरी को दूध की सप्लाई दी जा रही है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। गौ पालन हमारी पुरानी संस्कृति रही है। लेकिन धीरे-धीरे गौ पालन कम होता चला गया और दूध की जरूरत बढ़ती गई। शुद्ध प्राकृतिक दूध का उत्पादन बढ़ाने हेतु गांव-गांव में उन युवाओं को जो खेती के काम पर लगे हैं, उन्हें गाय, भैंस पालन हेतु अनुदान दिया जाए। तब ही स्वस्थ भारत की कल्पना की जा सकती है।

मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि मिलावटी दूध, पनीर एवं खोवा पर तत्काल प्रतिबंध लगाया जाए तथा दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। आज पूरे देश में बड़ी संख्या में फर्जी कागजों में डेयरी केन्द्र खोले जा रहे हैं, यह धंधा कालेधन को सफेद करने में सबसे प्रभावी सिद्ध हो रहा है। जिस पर तत्काल रोक लगाई जानी चाहिए। देश के सभी राज्यों के प्रत्येक जिले में एक-एक गौ अभ्यारण खोला जाना चाहिए। इससे गांव की समृद्धि बढ़ेगी तथा गरीबी भी कम होगा और इसके साथ ही देश दुग्ध उत्पादन में स्वावलम्बी बनेगा।

देश में ग्वाला गद्दी जैसी कई पंजीकृत दुग्ध डेयरियां हैं, जो वास्तविक रूप से प्राकृतिक दूध उत्पादन का कार्य करती हैं। ऐसी डेयरियों को भी प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

MR. CHAIRMAN:

Shri Arjun Ram Meghwal is allowed to associate with the matter raised by Shri Ganesh Singh.